بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-19.01.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

ओहद के युद्ध की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन तथा फ़लिस्तीन के लिए दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 19 जनवरी 2024, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- ओहद के युद्ध पर चर्चा हो रही थी, इसके अंतर्गत आगे के वृत्तांत बयान करूँगा। जैसा कि बयान हुआ था कि दुशमन ने ऐलान किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शहादत के विषय में जिसने यह सूचना फलाइ थी, जब मुसलमानों ने सुनी तो मुसलमानों की दशा क्या हुई, इसके विस्तार पूर्वक वर्णन में बयान हुआ है कि जब इब्ने क़मीअः ने यह समझा कि उसने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शहीद कर दिया है तथा उसने मुनादी करा दी कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गए है तथा यह भी कहा जाता है कि मुनादी करने वाला शैतान था, इसके बारे में कई कथन हैं कि घोषणा किसने की थी। सम्भव है विभिन्न लोगों ने यह ऐलान किया हो, कोई शैतानी प्रकृति का इंसान भी यह ऐलान कर सकता है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. में लिखा है कि उस अवसर पर मुसलमान तीन भागों में विभाजित थे। एक दल वह था जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहीद होने की सूचना सुन कर मैदान से भाग गया था उनमें हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ी. भी शामिल थे, परन्तु क़ुर्आन करीम में वर्णन मिलता है कि उस समय की विशेष परिस्थितियाँ तथा लोगों के भीतरी ईमान एवं निष्ठा को सम्मुख रखते हुए अल्लाह तआला ने उन्हें क्षमा कर दिया। उन लोगों में से कुछ मदीने तक जा पहुंचे जिसके कारण वहाँ भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

को काल्पनिक शहादत तथा इस्लाम की सेना के पराजित होने की सूचना पहुंच गई तथा पूरे नगर में कोहराम मच गया। मुसलमान पुरुष, महिलाएँ, बच्चे, बूढ़े ओहद के पहाड़ की ओर रवाना हुए तथा उनमें से कुछ दौड़ते हुए युद्ध के मैदान में पहुंच गए तथा अल्लाह का नाम लेकर शत्रु सेना को पक्तियों में घुस गए। दूसरे दल में वे लोग थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शहादत की सूचना को सुन कर लड़ने को बेकार समझते थे तथा एक ओर हट कर सिर को झुकाए बैठे थे। तीसरा दल वह था जो निरन्तर लड़ रहा था। इनमें से कुछ तो वे लोग थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आस पास जमा थे तथा अद्वित्तीय बलिदान के जौहर दिखा रहे थे तथा अधिकांश वे थे जो युद्ध के मैदान में इधर उधर बिखरे हुए लड़ रहे थे। इन लोगों तथा दूसरे दल के लोगों को जैसे जैसे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवित होने का पता लगता जाता था ये लोग दीवानों की तरह लड़ते भिड़ते आप स. के आस पास जमा होते जाते थे। उस समय युद्ध की स्थिति यह थी कि क़ुरैश की सेना समुद्र की भीषण लहरों की भांति चारों ओर से बढ़ता चला आ रहा था तथा युद्ध के मैदान में चारों ओर से तीरों तथा पत्थरों की वर्षा हो रही थी। श्रद्धालुओं ने इस शंका की स्थिति को देख कर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चारों ओर घेरा डाल कर आपके पवित्र शरीर को अपने शरीरों की ओट में छिपा लिया। परन्तु फिर भी जब कभी हमले का ज़ोर बढ़ता तो ये गिनती के कुछ लोग इधर उधर धकेल दिए जाते थे और ऐसी स्थिति में कई बार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लगभग अकेले रह जाते थे।

किसी ऐसे ही अवसर पर हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी. के मुशरिक भाई उतबा बिन अबी वक़्क़ास का एक पत्थर आप स. के पवित्र चेहरे पर लगा, जिससे आप स. का एक दांत टूट गया तथा होंठ पर भी घाव लगा। एक अन्य पत्थर जो अब्दुल्लाह बिन शहाब ने फेंका था उसने आप स. के माथे पर घाव किया तथा थोड़ी देर के बाद तीसरा पत्थर जो इब्ने क़मीअः ने फेंका था, आप स. के गाल पर आकर लगा, जिससे आप स. के युद्ध कवच अर्थात जो कवच चेहरा की रक्षा के लिए था, उसकी दो कड़ियाँ आप स. के गाल में चुभ गईं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. दुआ की क़बूलियत का दर्शन शास्त्र बयान कर रहे हैं। यह बयान करते हुए एक लम्बी व्याख्या के साथ आपने ओहद की इस घटना का भी वर्णन किया है। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पकड़ने के लिए ईरान के राजा ने निश्चय किया था किन्तु अभी पकड़ने वाले न आए थे, केवल सन्देश लेकर यमन के गवर्नर के आदमी पहुंचे थे। अल्लाह तआला ने उस राजा के पुत्र को प्रेरणा दी तथा उसने अपने बाप को मार दिया परन्तु ओहद की लड़ाई में दुशमन ने आप स. पर हमला किया, पत्थर मारे, आपके दांत टूट गए, सिर पर घाव हो गया तथा कवच की कीलें सिर में घुस गईं, आप स. बेहोश होकर गिर पड़े तथा लोगों ने समझा कि आप स. शहीद हो गए। अब कोई कहे कि यदि अल्लाह तआला को आप स. का इतना ध्यान था कि

आपके लिए ईरान के राजा को इतनी दूर मरवा दिया, तो उसने ओहद के मैदान में काफ़िरों को आप स. के ऊपर इस तरह पत्थर क्यूँ मारने दिए? तो यह आपत्ति उचित नहीं। यह अल्लाह तआला की यक्ति एवं दरदशिता होती हैं, ये रहस्य हैं, कुछ अवसरों पर वह थोड़ी सी बात पर पकड़ लेता है तथा कई बार वह किसी दरदशिता के कारण ढील देता है ताकि इंसान की दुर्बलता एवं असहाय होना प्रकट हो।

अतएव यह घटना चल रही है, हत्या की अफ़वाह के बाद फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सहसा दर्शन भी हुआ सहाबियों को। इसके वर्णन में लिखा है कि हज़रत अबू उबैदा रज़ी. वे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने उस समय सबसे पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहचाना कि आप जीवित एवं सलमात मौजूद हैं। हज़रत अबू उबैदा रज़ी. कहते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आप स. की आँखों के कारण पहचाना जो कवच के नीचे से रौशन एवं प्रकाशमान दिखाई दे रही थीं। मुसलमानों को जैसे जैसे सूचना मिलती गई, सब आप स. की ओर आए। जब सब मुसलमानों ने आप स. को देख कर पहचान लिया तो वे आप स. के आस पास पतंगों की भांति एकत्र हो गए। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने लिखा कि जब क़ुरैश तनिक पीछे हट गए तथा जो मुसलमान मैदान में मौजूद थे वे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहचान कर आप स. के चारों ओर जमा हो गए तो आप स. अपने उस सहाबियों के घेरे में धीरे धीरे पहाड़ के ऊपर चढ़ कर एक सुरक्षित स्थान पर पहुंच गए। रास्ते में मक्क का एक रईस अबी बिन ख़लफ़ की दृष्टि आप स. पर पड़ी तथा वह ईर्षा एवं द्वेष में अंधा होकर ये शब्द बोलते हुए आप स. की ओर लपका कि ***कहला नजूतु इन नजा*** अर्थात यदि मुहम्मद (सल्लल्लाह अलहि वसल्लम) बच कर निकल गया तो समझा कि मैं न बचा। सहाबियों ने उसे रोकना चाहा किन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- इसे छोड़ दो तथा मेरे निकट आने दो, तथा जब वह आप स. पर हमला करने की भावना से आप स. के निकट पहुंचा तो आप स. ने भाला लेकर उस पर एक वार किया, जिससे वह चक्कर खा कर धरती पर गिरा तथा फिर चींख़ता चिल्लाता हुआ वापस भाग गया, यद्यपि उसको जो घाव लगा वह अधिक गहरा नहीं था किन्तु मक्का पहुंचने से पहले हो वह धराशाई होकर ढेर हो गया।

जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस सुरक्षित स्थान पर पहुंच गए तो क़ुरैश के एक गिरोह ने ख़ालिद बिन वलीद के नेतृत्व में पहाड़ पर चढ़ कर हमला करना चाहा, परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशनुसार हज़रत उमर रज़ी. ने कुछ महाजिरों को साथ लेकर उसका मुक़ाबला किया तथा उसे पराजित कर दिया। एक रिवायत में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चट्टान के ऊपर जाने का इरादा किया तो पवित्र सिर के घाव में से ख़ून निकल जाने तथा दुर्बलता के कारण सामर्थ्य नहीं था। यह देख कर हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ी. आप

स. को अपने कंधों पर बिठा कर चट्टान के ऊपर ले गए। आप स. ने उसी समय फ़रमाया कि इनके लिए जन्नत निश्चित हो गई। हज़रत आयशा रज़ी. फ़रमाती हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. जब ओहद के दिन का वर्णन करते तो फ़रमाते कि वह दिन पूरा का पूरा तलहा रज़ी. का था।

ओहद के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो घाव लगे, उस हवाले से बुख़ारी की रिवायत है कि हज़रत फ़ातमा रज़ी. घाव को धो रही थीं और हज़रत अली रज़ी. ढाल में से पानी डाल रहे थे। हज़रत फ़ातिमा रज़ी. ने देखा कि पानी डालन से और अधिक ख़ून निकल रहा है तो उन्होंने बोरी का एक टुकड़ा जला कर उसके साथ चिपका दिया, जिससे ख़ून रुक गया। आप स. ने फ़रमाया कि वह क़ौम कैसे सफल हो सकती है जिसने अपने नबी को ज़ख़्मी किया तथा उसका एक चौथाई दांत तोड़ डाला जबकि वह उन्हें अल्लाह की ओर बुलाता है, फ़रमाया- शेष इन्शाअल्लाह आगे बयान होगा।

हुज़ूरे अनवर ने फ़लिस्तीन के लिए दुआ की तहरीक करते हुए फ़रमाया कि फ़लिस्तीन के बार मैं दुआ के लिए कहता रहता हूँ। अब यह मुसलमान देशों का हाल हो गया है कि बजाए इसके कि एक होकर फ़लिस्तीन का बचाने का प्रयास करें, स्वयं मुसलमानों ने लड़ना शुरु कर दिया है तथा पाकिस्तान एवं ईरान में भी, अब सुना है खोंचातानो शुरु हो गई है, एक दूसरे पर बम भी मारे हैं उन्होंने। तो यह भयानक स्थिति पैदा हो रही है। अल्लाह तआला ही इन मुसलमान देशों को, लीडरों को बुद्धि एवं समझ प्रदान करे, उनके लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला वास्तव में उनको अपने उद्देश्य को समझने का सामर्थ्य प्रदान करे तथा एक संयुक्त उम्मत बनने वाले हों।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- नमाज़ के बाद मैं दो जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाऊँगा। एक है सय्यद मौलूद अहमद साहब इब्ने सय्यद दाऊद मुज़फ़्फ़र शाह साहब का, जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. और सय्यदा उम्मे ताहिर साहिबा के नवासे, मेरे ख़ालाज़ाद भाई भी थे तथा मेरी पतनी के बड़े भाई थे। दूसरा जनाज़ा आकीद अग मुहम्मद साहब सदर जमाअत मेहदी आबाद और डूरी रीजन बर्कीना फ़ासो का है। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला इनसे मग़फ़िरत तथा रहम का सलूक फ़रमाए तथा इनकी संतान को भी, परिजनों को भी साहस एवं धैर्य प्रदान करे, उनकी नेकियाँ जारी रखने का सामर्थ्य प्रदान करे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131